Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 7809881

Roll No. 24029000803
Total Mark 58/75.00
Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010704T - KATHA SAHITYA

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	3/5						
1H	4/5						
1I	3/5						
2	12/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	12/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 04/01/2025 Shift: I Room No.: 09
Paper Code: A0107047 Subject: Katha Sahitya Year/Sem: I-sem
Name of Candidate: Ragini
Roll No.: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

Signature of Candidate: Ragini
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 1 0 7 0 4 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: Master of Art (Hindi)
Session: 2024-25 Year/Semester: I-Sem
Subject Name: Katha Sahitya
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 1 0 7 0 4 T
Exam Date: 0 4 0 1 2 0 2 5
Name of Candidate: R A G I N I
Father's Name: V I N D H Y A C H A L S H A R M A

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 0 9

परीक्षा केंद्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 0 9

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex- Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

7809881

A 0 1 0 7 0 4 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 7 0 4 T

PART-IV

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्ते के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. खोलों में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बालपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write **Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of** Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ④

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5.DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनाये क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल घड़ी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त शाक नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script. If found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code
A 0 1 0 7 0 4 T

उत्तर सं० - 1 (A)

गोदान मुंशी प्रेमचन्द का एक बहुचर्चित उपन्यास है। मुंशी प्रेमचंद जी ने उपन्यासों के क्षेत्र में एक क्रान्ति सी ला दी अपने लेखन से।

गोदान मुंशी प्रेमचन्द की यथार्थवादी व आदर्शवादी उपन्यासों में से एक है, गोदान उस समय के सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों की एक झलक देखने को मिलती है।

गोदान में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व के युग के किसान के जीवन को दिखाया गया है साथ ही उसकी जीवन की कठिनाइयों को भी लेखक ने भली प्रकार से दिखाया है।

गोदान मुख्य रूप से एक किसान होरी की कथा है जो एक मूल्यवान स्वावलम्बी, परिश्रमी, मार्मिक एवं कठिनाइयों से ग्रस्त किसान है।

होरी एक मध्यवर्गीय किसान है जो जीवन भर कठिन परिश्रम करता है अपना परिवार पालता है तथा जो उसके वश में है अपने परिवार के लिए वह सब कुछ करता है फिर भी वह जीवन भर कष्टों का सामना करता है तथा अपनी जीवन की एक मात्र पूर्ण इच्छा भी हम

Paper Code: A010704S

Do Not Write anything in this Portion

की पूरी नहीं कर पाया। जीवन की इन कठिनाइयो का सामना करने के बाद भी हारी उसने साहस को कोसता नहीं तथा सम्पूर्ण जीवन स्वयं के लिए एक इच्छा भी ना करने के बावजूद उसकी एक मात्र इच्छा गऊ का दान करने की पूरी ना हो सकी। इसके अथक प्रयासो के बावजूद वह अपने जीवन काल में गऊ का दान ना कर सका। जिसे आज समय के लोग [illegible] पुण्य एवं सामती कार्य मानते थे वह ना करा सका तथा बिना [illegible] दान किए ही परलोक सिधार गया।

उत्तर सं० - 1 (B)

आंचलिक शब्द का मूल शब्द 'अन्चल' माना गया है। किन्तु कुछ विद्वान आंचलिक शब्द की व्युत्पत्ति 'आंचल' शब्द मानते है। जो सर्वथा निरर्थक है।

आन्चलिक का आशय है कि किसी घटना अथवा परिवेश का उसके प्रभावों सहित उस घटना का यथार्थ व्यक्तत कहना अथवा लिखना।

आंचलिक शब्द का उद्भव 'अन्चल' शब्द से

Paper Code A01070 49

हुआ है, जिसे उपसर्ग जोड़कर आंचलिक शब्द बना है।

आंचलिकता के क्षेत्र मे फणीश्वर नाथ 'रेणु' का नाम अत्यधिक प्रसिद्ध है।

रेणु जी ने अपने उपन्यासो में आंचलिकता को जो प्रयोग, प्रस्तार किया है वह किसी ने नही किया। आंचलिकता के क्षेत्र में उनके मुकाबले कोई खड़ा नही हो सका

फणीश्वरनाथ 'रेणु' प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार के रूप में हिंदी साहित्य मे जाने जाते हैं जिन्होंने अपने जीवन काल मे कई आंचलिक उपन्यास लिखे हैं।

आंचलिक उपन्यास की विधा में लेखक किसी गाँव अथवा क्षेत्र का यथार्थ वर्णन करता है उसमे क्षेत्र की सभी विशेषताओं का बखान करता है। आन्चलिक उपन्यास के क्षेत्र में फणीश्वर नाथ रेणु ने मैला आन्चल नामक एक आन्चलिक उपन्यास लिखा है। जिसमे उन्होंने एक गांव पिर्यरी का जिक्र किया है जो बिहार, पश्चिम बंगाल तथा पाकिस्तान से उसका किनारा लगता है उसके के पात्र का चित्रण वहा का परिवेश का भली भांति चित्रण किया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A01070 4T

[उत्तर सं० - 1(c)]

'उसने कहा था' चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' जी की एक मौलिक कहानी है। जिसका शीर्षक कहानी के पात्र के कथदे के मर्रो से लिया गया है।

'उसने कहा था' कहानी में युद्ध का वर्णन के साथ लहनासिंह के के प्रेम प्रसंग को भी दर्शाया गया है।
लहनासिंह युद्ध के दौरान की गई बात को नही भूलता तथा 25 वर्ष बाद भी उसने अपने बालपन के प्रेम को याद रखा है। जो किशोरावस्था में प्रारम्भ हुआ था उस लड़की को धत। से।

उसने कथ कहा था कहानी लहनासिंह के माध्यम से समाज में वास्तविक प्रेम को उजागर किया है तथा लहनासिंह के माध्यम से फौजियों के जीवन को भी चित्रित किया है।

लहन सिंह एक वफादार फौजी, सच्चा देशभक्त तथा एक वफादार मित्र भी है साथ साथ वो एक अत्यन्त मा... एवं विचारशील प्रेमी भी है।

उसने कहा था कहानी का प्रारम्भ एक 12 वर्ष के लड़के तथा 8 वर्ष के लड़की के बातचीत से प्रारम्भ होती है जो अपने अपने

नारी के पास घूमने गये होते है। वहा बजार मे उनकी मुलाकात होती है। तथा लड़का लड़की से प्रश्न करता है — क्यों तेरी कुड़माई हो गई? और लड़की धत। कहकर चली जाती है। एक बार पुन यही वाक्या होता है तथा तीसरी बार व लड़की कहती है — हाँ हो गई।
यह सुनकर लड़के का मन अत्यन्त दुखी हो जाता है तथा दोनों दचले जाते है इसके बाद का दृश्य शुरू होता है फ्रांस के बेल्जियम तथा जर्मनी के बीच युद्ध से।
इस प्रकार लहन सिंह के माध्यम से लेखक ने आदर्श पुरुष के सर्जना की है तथा सामाजिक एवं राजनीतिक दशा को [illegible] किया है।

[उत्तर सं० — 1(D)]

कफन मुंशी प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानी है। जिसमे मुंशी प्रेमचंद ने समाज एवं उसके नायको की कटु आलोचना की है।

कफन मे मुंशी प्रेमचंद ने नारी के कष्ट एवं पुरुष वर्ग के [illegible] व्यक्तियों की दशा को बताया है।

कफन कहानी का मूल है कि एक गाँव मे दो बाप बेटे रहते है जिनके नाम क्रमश: घीसू व माधव था। दोनों ही अत्यन्त आलसी

एवं धूर्त थे। वे एक पैसा ना कमाने ना बनाते और एक दिन कमाता तो तीन दिन बैठकर खाता तथा माधव एक घंटे कमाता तो ? घंटे बैठ कर खाता। इस प्रकार वे दोनों आलसी व निकम्मे थे। वे खाने के लिए कभी-2 पड़ोसी के खेत से सब्जी चुरा लेते तथा घर के नाम पर उनके पास एक टूटी झोपड़ी थी तथा सम्पत्ति के नाम घर में मिट्टी के दो चार बर्तन।

कुछ वर्ष पूर्व ही माधव का विवाह हुआ था उसकी पत्नी बुधिया एक रूपवती तथा अत्यन्त परिश्रमी महिला थी।

विवाह के उपरान्त बुधिया ही दूसरो के घर काम करके इन दोनों का पेट पालती इस प्रकार वे और आलसी हो गए।
प्रसव पीड़ा के कारण बुधिया रात भर कराहती रही और अन्ततः मर गयी किंतु वे दोनों बाहर अंगीठी में आलू भूनकर खा रहे थे तथा दोनो में कोई अन्दर नहीं जा रहा था कि वे उसका आलू ना खा लें।
कफन के लिए मिले पैसे भी ये दोनों शराब पीकर खत्म कर दिये तथा मदमस्त होकर नाच दिये।
इस प्रकार प्रेमचंद ने समाज के यथार्थ का चित्रण अपनी कहानी के माध्यम से किया है।

Paper Code A 0 1 0 7 0 4 T

7

उत्तर संख्या - 1(E)

चीफ की दावत कहानी के लेखक भीष्म साहनी जी है जो एक यथार्थवादी कहानीकार है।
चीफ की दावत कहानी का मुख्य उद्देश्य पूर्व पीढ़ी तथा नई पीढ़ी के बीच आपसी संघर्ष को दर्शाना है।
इस कहानी का नायक शामनाथ अपनी बूढ़ी माँ की उपस्थिति से शर्म महसूस करता है किंतु फिर भी माँ अपने पुत्र के भले की ही कामना करती है।

चीफ की दावत कहानी का कथानक मैं शामनाथ के घर उसके चीफ दावत पर आने वाले है जिसे शामनाथ ने घर में न जरूरत की चीजें न होने के बावजूद किसी तरह व्यवस्था करके आमंत्रित किया है। शामनाथ अपने पदोन्नति के लिए चीफ पर निर्भर है। इसलिए उन्हे फुसलाने के लिए एवं रिझाने के लिए अपने दावत पर बुलाया है चीफ के आने के उपलक्ष में वह अपने घर का सारा पुराना सामान नए में बदल देता है किन्तु घर में यह पुरानी माँ तो अभी भी पुरानी है। इसका क्या किया जाए। इसलिए माँ को छुपाने के लिए कभी पड़ोसी के घर भेजने तथा कभी अलमारी में तैयार रख लेने का प्लान बनाता है। अंतत: माँ को एक किनारे बैठा दिया जाता है किंतु दूसरे पल के बाद फिर के लिए आते वक्त चीफ की नजर माँ पर पड़ जाती है। जिससे शामनाथ अत्यंत शर्म महसूस करता

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code
A C 1 b 7 0 4 r

है तथा माँ को नौकरी आदर्श संस्कार एवं गौरव के भ्रम होने के कारण उनकी सहायता करते हैं एवं माँ से मिलकर अति प्रसन्न होते हैं

इस कहानी से उद्देश्य है कि हमें अपने परिवार एवं अपने माता पिता तथा अपनी संस्कृति पर कभी शर्म नहीं करना चाहिए अपितु उनका सम्मान करना चाहिए।

उत्तर सं० - 1(f)

परिंदे कहानी आधुनिक युग की एक प्रमुख सामाजिक कहानी है जिसके माध्यम से इसकी लेखिका 'उषा प्रियवंदा' ने नारी जीवन के कठिनाइयों को उजागर किया है

परिंदे कहानी की लेखिका उषा प्रियवंदा है जो आधुनिक युग की एक महा-महान कहानीकार है।

अपने कहानी मे सामाजिक यथार्थ का चित्रण इनकी प्रमुख विशेषता है।

नारी जीवन कि[illegible] है तथा इन कठिनाइयो के बावजूद नारी के व्यक्तित्व मे कितनी आशा विद्यमान है ये वास्तव मे अचरज

की बात है उषा प्रियंवदा ने कहा कहानी के माध्यम से कहानी के नारी को ऊँचे आसमान में उड़ने के लिए प्रेरित किया है तथा स्वयं को पहचानने व स्वयं को मूल्य देने पर जोर दिया है।

इस कहानी के माध्यम से उन्होंने आजकल की नारी का चित्रण किया है। वो नारी जो सिर्फ घर के कामकाज, रिति रिवाजों में बंधी ना रहे सिर्फ घर के काम काज मे पारंगत ना हो सिर्फ अपनी संस्कृति की रक्षा ना करती रह जाए बल्कि इस नील गगन में विचरण करे अपने भीतर की शक्ति को पहचाने एवं आसमान मे विचरण करे।

उत्तर सं० – 1 (G)

पिता ज्ञान रंजन की कहानी है इसके माध्यम मे इन्होंने ने दर्शाया है कि किस प्रकार पिता पुराने ख्यालों का होते भी अपने पुत्र की आधुनिकता मे बाधा नही बनता तथा उन्हें अपने अनुसार जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

इस कहानी मे यह दर्शाया है कि भारत देश के सभी परिवारों की यही कहानी है। इसमे पुरानी पीढ़ी तथा नयी पीढ़ी के बीच संघर्षों का वर्णन किया गया है जो की वास्तविक एवं यथार्थ है। जिसे [illegible] जा नही जा सकता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A010704T

पिता अपने पुत्र से अत्यंत प्रेम करते है इसका कारण वो कभी अपने पुत्र की आधुनिक खुशी के आड़े नही आते। पुत्र भी मन ही मन पिता का बहुत सम्मान व आदर करता है किंतु कह नही पाता।

इस कहानी मे मुख्य समस्या है संवाद व बातचीत की पिता का प्रेम वे दिखा नही पाते उनकी उपस्थिति से उसकी पत्नी को परेशानी ना हो इसलिए वे स्वयं बाहर चले जाते है।

पिता पुराने खयालो के व्यक्ति है किंतु वे अपने पुत्र को आधुनिकता को अपनाने से कभी नही रोकते किंतु खुद आधुनिक विचार अपने अन्दर नही ला पाते वे अभी भी अपने पुराने [illegible] में ही खुश है।

उत्तर सं० – 1 (H)

मुंशी प्रेमचंद का नाम हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने युग में साहित्य मे कहानी, उपन्यासों एवं नाटको से हिन्दी साहित्य मे एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है वो अविस्मरणीय है। उपन्यास के क्षेत्र

में तो मानो उन्होंने क्रांति ही ला दी हो। यूं तो मुंशी प्रेमचन्द जी अनेक साहित्यिक विधाओं में रचनाएं लिखी। किंतु सर्वाधिक ख्याति उन्हें उपन्यास के क्षेत्र में ही मिली उन्होंने अपने जीवन काल मे कई उपन्यास लिखे।
उपन्यास दो प्रकार के होते है।
(i) यथार्थवादी उपन्यास
(ii) आदर्शवादी उपन्यास

मुंशी प्रेमचन्द ने अधिकतर यथार्थवादी उपन्यास लिखे है किन्तु उनके कुछ उपन्यासों में यथार्थवादिता तथा आदर्शवादिता मिले जुले है।

अपने जीवन काल में प्रेमचन्द कई रचनाएं की उनमें से कुछ निम्नलिखित है—

कहानी — पूस की रात, कफन, मंत्र, नमक का दरोगा, अंधेर शांति इत्यादि

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास निम्न लिखित है:—

(i) गबन
(ii) गोदान
(iii) निर्मला
(iv) सेवासदन
(v) रंग भूमि
(vi) कर्मभूमि

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 1 0 7 0 4 T

उत्तर सं॰ – 1 (I)

अमरकांत वर्मा जी प्रगतिवादी कहानीकार है इन्होंने नए युग की नई कहानिया लिखी है।

रजुआ अमरकांत वर्मा कृत जीक और जोंक कहानी का मुख्य पात्र है। जो एक अत्यंत परिश्रमी व्यक्ति है।

(i) मेहनती व परिश्रमी – रजुआ अत्यन्त मेहनती है वो जीवन भर अत्यन्त परिश्रम करता है तथा समाज के विषमताओं को सहन करता हुआ जीवन पथ पर आगे बढ़ता है।

(ii) स्वावलम्बी – वह अत्यन्त स्वावलम्बी व्यक्ति है जीवन के कष्टों को वह स्वयं वहन करता है बिना किसी का आश्रय वह स्वयं को निर्वाहता है।

(iii) स्वाभिमानी – रजुआ इतने कष्टो मे भी किसी का सहारा लेना पसन्द नही करता वह सभी परिश्रम कर लेता है किन्तु किसी से विनती नही करता तथा किसी का आश्रय नही लेता वह अपने जीवन का निर्वाह अपने बल पर करता हुआ जीवन की कठिनाइयों को स्वयं वहन करता है।

(iv) भारतीय कृषक — रजुआ भारतीय कृषक की भांति जीवन निर्वाह करता हुआ अपने कठिनाइयों को दर्शाता नही है। तथा धन के आभाव मे भी स्वयं को स्वाभिमानी बनाए रखता है। तथा अपने गरिबी के बोझ तले पिसता हुआ भी अपने भाग्य को नही कोसता।

खण्ड — ब

उत्तर सं० — 4

हिन्दी साहित्य के इतिहास में जिस प्रकार अनेक विधाओं का उद्भव भारतेंदु युग से हुआ है उसी प्रकार हिन्दी उपन्यास का उदभव भी भारतेंदु युग से माना जाता है। इस युग मे उपन्यास के बीज अंकुरित होने लगे थे तथा इस काल के कवि प्राचीन महाकाव्यों का अनुवाद करके अनुदित उपन्यासो की रचना करने लगे थे।

हिन्दी साहित्य के विधाओ मे उपन्यास गद्य विधाओं के अंतर्गत आने वाली एक प्रमुख विधा है जिसका विस्तार आज के युग मे अत्यन्त वृहद क्षेत्र पर हो चुका है।

Do Not Write anything in this Portion

हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी उपन्यास का उद्भव हम भारतेंदु युग से मान सकते है
क्योंकि इस युग में हिंदी उपन्यास का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया था
किंतु इस युग मे मौलिक उपन्यास के अपेक्षा अनुदित उपन्यास प्रकाशित होते थे

हिन्दी उपन्यास का काल विभाजन—

प्रेमचन्द्र पूर्व हिन्दी उपन्यास – 1850 से 1902 तक

प्रेमचन्द्रयुगीन हिन्दी उपन्यास – 1902 से 1920 तक

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास – 1920 से अब तक

हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित नाम प्रेमचन्द का सुनने मे आता है। इन्ही के नाम उपन्यास का काल विभाजन किया जाता है। तथा प्रेमचंद एक युग प्रवर्तक उपन्यासकार हुए है।

प्रेमचन्द्र पूर्व हिन्दी उपन्यास –

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास का काल प्रमुखतः भारतेन्दु काल है इस काल में लेखक अनुदित उपन्यासो की रचना करते थे

किंतु इस काल कुछ उपन्यासकारों ने मौलिक उपन्यास की अपेक्षा अन्य क्षेत्रों में हिन्दी उपन्यास लिखे तथा प्रसिद्धि अर्जित की

इन उपन्यासकारों में बदरीनारायण चौधरी. ने मौलिक उपन्यासों की अपेक्षा सामाजिक उपन्यास लिखे

तथा देवकीनन्दन खत्री ने 'चन्द्रकान्ता' नामक एक तिलस्मी उपन्यास लिखा जो पाठकों को अत्यन्त पसन्द आया तथा लोग उसमें रुचि लेने लगे।
इस प्रकार देवकीनन्दन खत्री ने तिलस्मी उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया तथा अनेक तिलस्म से भरे उपन्यासों की रचना की।

इस प्रकार डॉ. जैनेंद्र ने मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना की जो मनोविश्लेषण वादी होते थे।
जैनेंद्र को मनोवैज्ञानिक उपन्यास कार भी कहा जाता है।

प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास (1902 ई. — 1936 ई.) —

प्रेमचंद युग में हिन्दी उपन्यास काफी विकसित हुआ उपन्यास का विकास प्रेमचंद युग में ही हुआ।

मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व

Paper Code A0107045

क्रांति ला दी तथा अनेक उपन्यासों की रचना की

प्रेमचंद युग के प्रमुख उपन्यासकारों के नाम निम्न लिखित हैं:-

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', मुंशी प्रेमचंद, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर इत्यादि

इस युग में मौलिक उपन्यासों का लेखन प्रारम्भ हो चुका था तथा उपन्यासों में यथार्थवादिता की झलक भी दिखाई देने लगी थी

मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास लेखन के लिए यथार्थवादिता को अपनाया एवं समाज का कल्याण पर ध्यान केंद्रित कराया।

प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास (1920 ई॰ — अबतक)—

प्रेमचंद के पश्चात भी उपन्यास के क्षेत्र में आयी क्रांति रुकी नहीं पाश्चात्य उपन्यासों को छोड़कर अब के युग के उपन्यासकारों ने उपन्यास को नई दिशा [illegible] की है तथा उपन्यास के अब [illegible] मौलिकता को जीवित रखा।

इस युग के उपन्यासकारों ने उपन्यास के क्षेत्र में यथार्थवादी उपन्यासों की रचना की

Paper Code A 0 1 0 7 0 4 T

इस युग के कुछ उपन्यासकार निम्नलिखित हैं:—

बालकृष्ण शर्मा नवीन, विनयकुमार शर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', जैनेन्द्र, फणीश्वर नाथ 'रेणु', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' इत्यादि।

इस युग के उपन्यासकारों ने यथार्थवादी उपन्यासों के साथ आदर्शवादिता को समाहित करके हिन्दी उपन्यासों की रचना की है।

खण्ड — स

उत्तर सं०—

- हिन्दी कहानी—

हिन्दी साहित्य के इतिहास में सबसे पुरानी व सबसे विस्तृत प्रसार कोई विधा है तो वो कहानी ही है।

कहानी का प्रारम्भ आरम्भिक युग से ही हो गया था किंतु उस समय ये कहानी काव्य के रूप में विद्यमान थी।

कहानी का विकास भी अन्य विधाओं की तरह भारतेन्दु युग से माना जाता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A0 10704T

उदभव :— हिन्दी कहानी का उदभव अन्य विधाओं की भांति भारतेंदु युग से माना जाता है। इस काल में लेखकों ने महाकाव्यों का अनुवाद करके उन्हें कहानी के रूप में लिखना प्रारम्भ कर दिया था
किंतु उन्हें मौलिक कहानी नहीं कहा जा सकता था

हिन्दी कहानी का उदभव व विकास को समझने के लिए हम हिन्दी कहानी का काल विभाजन करते हैं।

काल	वर्ष
प्रेमचन्द्रपूर्व कहानी —	(सन् 1853 ई. — 1900 तक)
प्रेमचन्दयुगीन कहानी —	(सन् 1900 → 1938 तक)
प्रेमचन्दोत्तर कहानी —	(सन 1938 → अब तक)

हिन्दी कहानी के काल विभाजन की दृष्टि से हिन्दी कहानी का उदभव—

प्रेमचन्द्रपूर्व हिंदी कहानी — हिन्दी कहानी का उद्भव सन 1853 से माना जाता है किंतु इससे पूर्व ही हिंदी कहानी का लेखन प्रारम्भ हो चुका था प्रमुखत: इस काल में हिन्दी कहानी

Paper Code A0107045

का उदभव प्रारम्भ हुआ।

प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी (1900 — 1936) —

भारतेंदु युग मे लिखी गई कहानी को मौलिक कहानी नही कहा जा सकता अतः हिन्दी कहानी का वास्तविक उदभव प्रेमचंद युग से माना जाता है इस युग की कहानियां निम्न लिखित है।

इस युग की कुछ प्रारम्भिक कहानियाँ —

i. इन्दुमती —— किशोरीलाल गोस्वामी (1900
ii. बड़े घर की बेटी — बंगमहिला ⟶ 1902
iii. ग्यारह वर्ष का समय ⟶ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1903)
iv. दुलाईवाली ⟶ बंग महिला ⟶ (1904)

इस प्रकार थी हिन्दी की कुछ प्रारम्भिक कहानिया है।

इन्दुमती एक मौलिक कहानी है अतः इस प्रकार आचार्य शुक्ल द्वारा लिखित "ग्यारह वर्ष के समय" को हम हिन्दी की प्रथम कहानी मानते है। किंतु प्रथम अनुदित कहानी इन्दुमती ही है।

इस प्रकार हिन्दी "कहानी" का अधिकांश विकास प्रेमचंद युग मे हुआ।
युग प्रवर्तक प्रेमचंद जी ने भी कई कहानिया लिखी जैसे — नमक का दरोगा, पूस की रात, इस प्रकार प्रेमचन्द की कलम का जवाब नहीं।

Do Not Write anything in this Portion

इस युग के प्रमुख कहानीकारो मे :—

मुंशी प्रेमचंद्र, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', विष्णु प्रभाकर, महावीर प्रसाद द्विवेदी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इत्यादि।

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी — युग [1930 – अबतक] —

प्रेमचंद युग मे हिन्दी कहानी का विकास प्रारम्भ हो गया था किंतु उस काल मे मौलिक एवं सामाजिक कहानिया ही लिखी गई।

प्रेमचन्द के पश्चात के लेखको मे कहानी लेखन मे एक नई पद्धति अपनाई इस युग के कहानीकार यथार्थवादी कहानी लिखते थे

तथा इस युग के लेखको ने मजदूर वर्ग किसान वर्ग की समस्याओ को उजागर किया तथा समाज की वास्तविक स्थिति पाठको के सामने रखी।

इस युग के लेखको ने मनोविश्लेषण वादी कहानी लिखी तथा प्रकृति प्रेम से

Paper Code AP 07 04 T

21

सम्बंधित कहानिया लिखी।

इस युग के कहानीकारों मे मनोविश्लेषण वादी कहानीकार जैनेन्द्र, डॉ नगेन्द्र, रामविलास शर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय (हरिऔध) इत्यादि प्रमुख है।

इस प्रकार हिन्दी कहानी का उद्‌भव प्रेमचन्द के पूर्व तथा विकास प्रेमचन्द युग मे निरन्तर विकासमान है। तथा हिन्दी कहानी एक मजबूत विधा के रूप मे निखरी है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

A 0 1 0 7 0 4 T

Paper Code

A 0 1 0 7 0 4 T

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

A0107045

24